ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Receivedon 28th Feb 2018, **Revised** on 7th Mar 2018; **Accepted** 17th Mar 2018

शोध पत्र

माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

* देवेन्द्र कौर, व्याख्याता
मूर्ति देवी मैमोरियल बी.एड. कॉलेज, सादुलशहर, श्रीगंगानगर (राज.)
Email: jotsandhu9233@gmail.com, Mob.- 7665436000

मुख्य शब्द *– आत्म–सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन आदि।*

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों का आत्म–सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालयों के 640 विद्यार्थियों का चयन किया गया। ऑकड़ों के संकलन हेतु डॉ. राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म–सम्प्रत्यय प्रश्नावली व डॉ. वी.पी. शर्मा, डॉ. प्रभा शुक्ला, डॉ. किरण शुक्ला द्वारा निर्मित सामाजिक अभिक्षमता मापनी तथा डॉ. ए.के. सिंह, ए. सेन गुप्ता द्वारा निर्मित माध्यमिक विद्यालय समायोजन प्रमापनी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात सांख्यिकी प्रतिविधियों को प्रयुक्त किया गया। विश्लेषण करने के उपरान्त पाया गया कि हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में आत्म–सम्प्रत्यय तथा समायोजन के आधार पर तो अन्तर नही पाया जाता है, परन्तु इनमें सामाजिक अभिक्षमता के आधार पर अन्तर पाया गया है। माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम विद्यार्थियों में अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों की तुलना में सामाजिक अभिक्षमता उच्च स्तर की परिलक्षित हुई।

विषय प्रवेश

प्रस्तुत वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालकों के ज्ञान, चरित्र और व्यवहार को एक विशेष ढॉचे में ढाला जाता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह कक्षा–कक्ष तक ही सीमित नही है, बल्कि व्यक्ति में समायोजन, सामाजिक अभिक्षमता तथा आत्म–सम्प्रत्यय आदि गुणों का विकास करती है तथा उसे अपने आप को सुलझाने में सहायता करती है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो युवकों में ऐसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भावात्मक गुणों का विकास करती है, जिन गुणों मनोभावों की समाज नई पीढी से अपेक्षा करता है, इस संदर्भ में शिक्षा एक अविरल विकास व बदलाव की प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बालक–बालिका का समग्र विकास होता है।

शिक्षा राश्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। जिस समाज या देश का शिक्षा स्तर जितना अधिक उच्च होता है, वह उतना ही समृद्धिशाली व खुशहाल होता है। प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में माध्यमिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह सफलता की पहली सीढ़ी है जिसके उपरान्त व्यक्ति किसी एक विशिट क्षेत्र का चुनाव करता है। राष्ट्रीय विचारधारा व चरित्र का निर्माण करने में जितना महत्वपूर्ण स्थान माध्यमिक शिक्षा का है, उतना किसी दूसरी सामाजिक, राजनीतिक या शैक्षणिक गतिविधि का नहीं हैं। अतः शिक्षा के इस महत्व के कारण ही आज प्रत्येक बच्चे के माता –

पिता यह चाहते है कि उसका बच्चा अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त कर, समाज व राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देकर अपनी पहचान बना सकें।

आत्म सम्प्रत्यय

आत्म सम्प्रत्यय पद का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में विस्तृत रूप से किया जाता है। इसे सामान्य रूप से व्यक्ति से सम्बन्धित विचारों, भावनाओं एवं अभिवृत्तियो से समझा जाता है। एक व्यक्ति जिस प्रकार से अपना प्रत्ययीकरण करता है अथवा जिस ढंग से अपने आप को देखता है, उसे ही आत्म सम्प्रत्यय कहते है।

सामाजिक अभिक्षमता

सामाजिक अभिक्षमता समाज में व्यक्ति की कार्य कुशलता की विशिष्ट योग्यता या विशिष्ट क्षमता है। यह व्यक्ति की सामाजि, संवेगात्मक और ज्ञानात्मक कौशल और व्यवहार को बताती है, जो क बच्चों में समाज में अनुकूलन के लिए आवश्यक होती है। सामाजिक अभिक्षमता एक संक्षिप्त न होकर विस्तृत धारणा है। यह विस्तृत है क्योंकि कौशल और व्यवहार, जो स्वस्थ सामाजिक विकास के लिए आवश्यक होते हैं, अलग–अलग आयु के बच्चों में परिस्थिति के अनुसार अलग–अलग पाये जाते हैं।

समायोजन

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी सामाजिक वातावरण में रहता है। इस वातावरण से ही उसकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। व्यक्ति की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति कभी सरल ढंग से हो जाती है और कभी उसको इस प्रकार की पूर्ति में कुछ न कुछ बाधा पड़ती है। व्यक्ति की जब स्वभाविक इच्छा की पूर्ति नही होती है, तो शनैः शनैः वह इस अप्रिय स्थिति से समझौता कर लेता है। इसी समझौते को मनोविज्ञान की भाषा में ''समायोजन'' कहते हैं। शिक्षा के माध्यम द्वारा विद्यार्थियों में आत्म सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन आदि सम्प्रत्ययों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। सभी विद्यालयों द्वारा, चाहे वो हिन्दी माध्यम हो या अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, विद्यार्थियों के उचित विकास के लिए प्रयास किये जाते हैं, लेकिन उपर्युक्त दोनो प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता व समायोजन जैसी अवधारणाओं के विकास में अन्तर होने की संभावना बनी रहती है।

शोध कार्य की सार्थकता

किसी भी समस्या पर भोध करने से पूर्व उसकी आवश्यकता तथा महत्व को जानना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि उस शोध से प्राप्त परिणाम केवल शोधकर्ता को ही नहीं अपितु उस क्षेत्र से संबंधित सभी व्यक्तियों को प्रभावित करते है। अतः प्रत्येक समस्या पर कार्य करने से पूर्व यह जानना जरूरी है कि उस शोध से प्राप्त परिणाम उस क्षेत्र तथा उससे संबंधित व्यक्तियों को कैसे और किस हद तक प्रभावित करेंगें। शैक्षिक क्षेत्र में जब कोई अनुसंधान किया जाता है तब वह अनुसंधान स्वयं अनुसंधानकर्ता के लिये नहीं अपितु शैक्षिक क्षेत्र में संबंधित सभी व्यक्तियों के लिये होता है। अतः प्रत्येक समस्या पर कार्य करने से पूर्व यह देखना उचित है कि अनुसंधान के परिणाम शैक्षिक जगत व उसके व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करेंगे। विद्यार्थियों में समायोजन, सामाजिक अभिक्षमता, आत्म सम्प्रत्यय आदि गुणों का विकास होना आव यक है तभी वह अपने आस–पास के वातावरण से अच्छे संबंध बनाए रखने में सफल हो जाता है। हिन्दी माध्यम तथा अंगेंजी माध्यम विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण व भौतिक संसाधन में अंतर पाया जाता है जिससे इन विद्यार्थियों में आत्म सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन का विकास अलग–अलग ढंग से होता है। यह अध्ययन हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेंजी माध्यम विद्यार्थियों में आत्म सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन में अन्तर बताने में सहायक सिद्ध हो सकेगा क्योंकि समाज की धारणा है कि हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेंजी माध्यम के विद्यार्थियों में उपरोक्त

आधारों पर अन्तर होता है। यद्यपि दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों को यथासंभव अनुकूल वातावरण देने का प्रयास किया जाता है। अन्त में यही कहा जा सकता है कि हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेंजी माध्यम के विद्यार्थियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को उद्घाटित करने की दृष्टि तथा समस्याओं एवं कठिनाईयों के निवारण हेतु शोध की अपनी उपयोगिता है।

उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों का आत्म सम्प्रत्यय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों का सामाजिक अभिक्षमता के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों का समायोजन के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में आत्म सम्प्रत्यय के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में सामाजिक अभिक्षमता के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में समायोजन के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध कार्य का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध राजस्थान के श्रीगंगानगर तथा हनुमानगढ जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के 640 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन के लिए कक्षा 10 के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा विषय की समस्या को भली–भांति समझकर शोध के लिए **सर्वेक्षण विधि** का अध्ययन हेतु चयन किया है।

शोध में चयनित न्यादर्श

सम्बन्धित शोध अध्ययन को श्रीगंगानगर व हनुमानगढ जिले तक सीमित रखा गया हैं। न्यादर्श के अन्तर्गत हिन्दी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम के 640 विद्यार्थियों को लिया गया है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है–

सारणी सं. 1

जिला	श्रीगंगानगर		हनुमानगढ		कुल
विद्यार्थी	हिन्दी माध्यम	अंग्रेजी माध्यम	हिन्दी माध्यम	अंग्रेजी माध्यम	
ग्रामीण छात्र	40	40	40	40	160
ग्रामीण छात्राएँ	40	40	40	40	160
शहरी छात्र	40	40	40	40	160
शहरी छात्राएँ	40	40	40	40	160
योग	**160**	**160**	**160**	**160**	**640**

शोध में चयनित न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में सम्बन्धित आंकडों का संकलन करने के लिए मानकीकृत उपकरणों का चयन किया गया है। इनका वर्णन निम्नानुसार है–

1. **मानकीकृत आत्म प्रत्यय प्रश्नावली (डॉ. राजकुमार सारस्वत)**
2. **मानकीकृत सामाजिक अभिक्षमता मापनी (डॉ. वी.पी. शर्मा, डॉ. प्रभा शुक्ला, डॉ. किरण शुक्ला)**
3. **मानकीकृत माध्यमिक विद्यालय समायोजन प्रमापनी (डॉ. ए.के. सिंह तथा ए. सेन गुप्ता)**

संख्यिकी प्रविधियॉ

एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात प्रविधियॉ प्रयुक्त की गई।

परिणाम

माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों का आत्म सम्प्रत्यय

सारणी सं. 2

क्र.स.	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रता की कोटि	परिणाम
1	हिन्दी माध्यम विद्यार्थी	320	224.36	8.258	0.67	1.61	638	स्वीकृत
2	अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थी	320	223.28	8.86				

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि हिन्दी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में आत्म–सम्प्रत्यय के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसकी पुष्टि क्रान्तिक अनुपात (1.61), जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः हिन्दी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय का स्तर लगभग समान है।

माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों की सामाजिक अभिक्षमता

सारणी सं. 3

क्र.स.	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रता की कोटि	परिणाम
1	हिन्दी माध्यम विद्यार्थी	320	226.99	8.576	0.70	2.65	638	स्वीकृत
2	अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थी	320	225.13	9.252				

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि हिन्दी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में सामाजिक अभिक्षमता के आधार पर सार्थक अन्तर है। इसकी पुष्टि क्रान्तिक अनुपात (2.65), जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः हिन्दी माध्यम विद्यार्थियों में सामाजिक अभिक्षमता अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर की होती है।

माध्यमिक विद्यालय के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों का समायोजन

सारणी सं. 4

क्र.स.	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रता की कोटि	परिणाम
1	हिन्दी माध्यम विद्यार्थी	320	117.15	8.653	0.67	0.45	638	स्वीकृत
2	अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थी	320	116.95	8.403				

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि हिन्दी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में समायोजन के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसकी पुष्टि क्रान्तिक अनुपात (0.67), जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः हिन्दी माध्यम विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर लगभग समान है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं–

1. माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में आत्म–सम्प्रत्यय के आधार पर अन्तर नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों की तुलना में हिन्दी माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक अभिक्षमता उच्च स्तर की है।

3. माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर लगभग समान है।

चयनित सन्दर्भ सूची

1. मिश्रा, महेन्द्र कुमार (2008). *''विकासात्मक मनोविज्ञान''*, जयपुरः यूनिवर्सिटी, बुक हाउस (प्रा.) लि.

2. सरीन एवं सरीन (2007). *''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ''*, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर.

3. अरोड़ा, रीता मारवाहा, सुदेश (2008). *''शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार''* जयपुरः शिक्षा प्रकाशन.

4. बुच, एम. बी. (1988). *''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन*, एन. सी. ई. आर. टी, न्यू दिल्ली वॉल्युम–1

5. बुच, एम. बी. (1988). *''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन''*, एन. सी. ई. आर. टी. वॉल्युम–2 न्यू दिल्ली।

6- Website : www.education.nic.

**** Corresponding Author:***
देवेन्द्र कौर, व्याख्याता
मूर्ति देवी मैमोरियल बी.एड. कॉलेज, सादुलशहर,, श्रीगंगानगर (राज.)
Email: jotsandhu9233@gmail.com, Mob.- 7665436000